R.N.I.- UP-HIN/2001/3996
ISSN- 2581-6128

स्थापन दिवस के 26वें वर्ष में प्रवेश

शहर समता

(हिंदी साप्ताहिक)

www.shaharsamta.com

शोध पत्र

'कर्मक्षेत्र रणभूमि यही है, मानव हो तुम कर्म करो।
कर्म से कभी विमुख न रहना, मन में यह संकल्प करो।'-
उमेश श्रीवास्तव

संस्थापकः स्व0 कन्हैया लाल, स्व0 श्रीमती साधना श्रीवास्तव
सम्पादकः उमेश चन्द्र श्रीवास्तव

डॉ०(कु०)शशि जायसवाल विशेषांक

वर्ष 26 | अंक 14 | रविवार, इलाहाबाद, 30 अगस्त 2026 | पृष्ठ 4 | विशेषांक मूल्यः 3 रू0

❖ संपादकीय

इस बार डॉ०(कु०)शशि जायसवाल

उमेश श्रीवास्तव
संपादक

जीवन में अध्यात्म का,
होता बड़ा महत्व ।
इससे ही जीवन बने,
सुखद, शहज, समृद्ध ।

तो बात हो रही है डॉक्टर शशि जयसवाल की। सरल,सहज और मृदु भाषी डॉक्टर शशि जयसवाल वैसे तो अध्यापिका है, लेकिन सदैव आध्यात्म और भक्ति भावना से लबरेज रहती है। डॉक्टर शशि जयसवाल की रचनाओं में उनका यही व्यक्तित्व झलकता है। जीवन के कई सोपनो को पार कर चुकी डॉक्टर शशि जयसवाल का पूरा व्यक्तित्व संघर्षों से भरा पड़ा है लेकिन बड़ी सरलता से यह संघर्ष वाले भावों को प्रकट नहीं होने देती। डॉक्टर शशि जयसवाल संस्कृत निष्ट और विचारशील रचनाकार हैं ।

कुछ बानगी देखिए

पहले बानगी

अपनी भारत भूमि की, यही तिरंगा शान।
तीन रंग में है छिपा, हम सब का अभिमान।।1।।
लहर तिरंगा व्योम में, देता यह संदेश।
अमर शहादत को कभी, देना तनिक न क्लेश।।2।।

दूसरी बानगी

दिवस सुहाने लग रहे, आया शिव का मास।
आनंदित शिवभक्त हैं, भरा हृदय उल्लास।।
हृदय भरा उल्लास, महीना सावन पावन।
काँवड़ियों की भीड़, लगे है बड़ा सुहावन।।

तीसरी बानगी

पृथ्वी कहती धैर्य न छोड़ो,
ये जीवन अनमोल प्रिये।
कितना भी हो भार उठा लो,
मत अधीर होना सुप्रिये।।

डॉक्टर शशि जयसवाल को जुलाई माह का सावित्री देवी स्मृति साहित्य सम्मान देते हुए संस्था प्रसन्न है। संस्था आपके सुंदर भविष्य की कामना करता है। अंक कैसा लगा प्रतिक्रिया जरूर दीजिए।

अंत में -

सुखद भोर की सुंदर बातें ,
आती जाती हैं सब रातें ।
बड़ी सुहानी लगती है,
मनभावन सुंदर सी बातें ।

उमेश श्रीवास्तव

❖ कवितायें

डॉ०(कु०)शशि जायसवाल
कवयित्री

युवा शक्ति है ज्योतिपुंज

युवा शक्ति है युगनायक, सब जागे और जगाएँ।
सृजन मार्ग में क्षमता इसकी, देश का मान बढाएँ।।
धीर वीर साहस प्रतिभा सब, युवा है मन में समेटे।
स्वस्थ राष्ट्र निर्माण हेतु हम, युवा को अवसर भेंटे।।

शिक्षा के हर क्षेत्र में परचम, युवा ने है फहराया।
शिक्षित युवाशक्ति ने सारे, जग को है महकाया।।
आज क्यों विचलित युवा हमारा, चिन्तन करना होगा।
नए रक्त की उर्जा को हर हाल बचाना होगा।।

स्वरोजगार के अवलम्बन से युवाशक्ति दृढ़ होगी।
संस्कार से क्षमताओं की, जड़ मजबूत भी होगी।।
राजनीति से होता हरदम, युवाशक्ति का शोषण।
मार्ग वही उत्तम जिससे हो, प्रतिभाओं का पोषण।।

आज धरा से अन्तरिक्ष तक, युवा ने पथ को मापा।
युवाशक्ति भवितव्य देश का, वयोवृद्ध ने भापा।।
ऋषि मुनियों सा दिव्यज्ञान, हम सबका ही अभिमान है।
युवाशक्ति ही ज्योतिपुंज है, भारत की पहचान है।।

वन्दे मातरम

मातृभूमि की रक्षा खातिर, अर्पण किया है जिसने तन-मन।
माँ भारती के उन सपूतों ने, सफल किया है अपना जीवन।।
राष्ट्र प्रथम है माना जिसने , उनसे सीखो वन्दे मातरम्।
धड़कन में जिनके है बसता, वन्दे मातरम् वन्दे मातरम्।।

सीमा पर तैनात जो सैनिक, कहाँ हैं करते अपनी चिन्ता।
देशभक्ति का भाव प्रबल कब, देखा करता वो है निहन्ता।।
सजग हमारे वीर सैन्य को, देखो सीखो वन्दे मातरम्।
बारूदों पर चढ़कर कहते , वन्दे मातरम् वन्दे मातरम्।।

वचनबद्ध माँ के सपूत, अरिवध से राष्ट्र को मढ़ते हैं।
अन्तिम साँसों तक परहित, सर्वस्व समर्पित करते हैं।।
लतपथ खून - पसीने में भी, कहते जो हैं वन्दे मातरम्।
राष्ट्र ध्वजा की शान के लिए, वन्दे मातरम् वन्दे मातरम्।।

रोम-रोम में जिनके बसता, कुर्बानी का भाव प्रबल।
आँधी-तूफानों में भी है, बढ़ते जिनके कदम सबल।।
जीवन पुष्प चढ़ाने वालों , नमन आपको वन्दे मातरम्।
झुकने दिया न शीश वतन का, वन्दे मातरम् वन्दे मातरम्।।

वतन पहले है धड़कन में

वतन पहले है धड़कन में इसे रखना मेरे यारों,
शहादत अपने वीरों की वतन की लाज है यारों।
कभी चिन्ता न अपनी की थी जिसने देश के खातिर,
उन्हीं कुर्बानियों को आज अर्पित पुष्प है यारों।।

हमें निज देश को महफूज रखना जतन से अपने,
इतर हो स्वार्थ से बस देश खातिर हो सभी सपने।
कोई शातिर अगर अपने वतन पर आँख भी डाले,
उसे संहार कर पल भर न देना यहाँ पर टिकने।।

ये आजादी नहीं आसान थी जो मिल गई हमको,
हुए थे रक्तरंजित पूत शत् - शत् है नमन उनको।
कोई बेवा हुई, कितनों ने खोया कुल के दीपक को,
प्रज्ज्वलित दीपक कर सुमन अर्पित करें सबको।।

ये नभ में झूमता दिखता है ध्वज जो तीन रंगों में,
केसरिया जोश शीतल श्वेत विकसे हरित जंगों में।
मेरी मंजिल मेरा भारत निगाहों में जो हम सबके,
वही प्राणों से अभिसिञ्चित सदा दिखता तिरंगों में।।

तिरंगे का भी कर्ज चुकाना है

आजादी का जश्न अभी तक आधा ये बतल ाना है।
देश के गद्दारों को हमें ही आगे बढ़ के मिटाना है।।
अपने बलिदानों से सींचा जिसने देश की बगिया को।
वीर सपूतों अभी तिरंगे का भी कर्ज चुकाना है।।

अपने देश की ध्वजा की रक्षा खातिर सब मंजूर जिन्हें।
नहीं झुका था, नहीं झुकेगा इसी ध्वजा पे गुरूर उन्हें।।
अभी जगत को आन मान सम्मान का पाठ पढ़ाना है।
हैं शहीद अभिमान तिरंगे का भी कर्ज निभाना है।।

तीन रंग से बना तिरंगा केसरिया रंग साहस का।
श्वेत शान्ति और सच्चाई का उर्वर हरा समृद्धि का।।
लाल रक्त से धरा नहाई रगों में जोश पुराना है।
भारत माँ के लाल तिरंगे का भी कर्ज निभाना

❖ कवितायें

डॉ०(कु०)शशि जायसवाल
कवयित्री

है।।

यहीं तिरंगा है प्रतीक सम्मान और बलिदानों का।
याद हमें प्रतिपल आते हैं जोश मेरे दीवानों का।।
अभी तो भारत माँ को यारों विश्व गुरु भी बनाना है।
उठो सपूतों आज तिरंगे के भी कर्ज निभाना है।।

कथनी करनी के अंतर से

जीवन पुष्प चढ़ाने वालों, तुमसे रक्षित सकल जहाँ,
कथनी करनी के अंतर से, अकर्मण्य अति हुए यहाँ।

अपने देश की सुन्दर माटी, रोज पुकारे वीरों को,
गले लगाकर पास बुलाती, अपने सब रणधीरों को।
वीर सपूतों वाली धरती, इस जग में है और कहाँ,
कथनी करनी के अंतर से, अकर्मण्य अति हुए यहाँ।।

कथनी करनी में अंतर से, गलत दिशा में हम जाते,
देख दूसरों की तरक्की से, नफरत से हम भर जाते।
नकारात्मक इस विचार से, हो पाते जन सफल कहाँ,
कथनी करनी के अंतर से, अकर्मण्य अति हुए यहाँ।।

सबसे पहले व्यक्ति आचरण, आस बँधाता मानव में,
धन बल नहीं प्रथम है भाई, इसकी गणना दानव में।
दृढ़ता और परिश्रम के सम, दूजा कोई सम्मान कहाँ,
कथनी करनी के अंतर से, अकर्मण्य अति हुए यहाँ।।

आजादी के दीवाने

चलो आज़ादी की तस्वीर फिर से याद करते हैं।
शहीदों के दिलों में थी जो ज्वाला याद करते हैं।।
जहाँ कुर्बानियाँ पहुँची थी लेकर अपनी आजादी।
वो बहती धार लहू बलिदानियों की याद करते हैं।।

हवाओं को भी ये बातें बताना आज हमको है।
चरागें बुझ न पायें यत्न मिलकर आज करते हैं।।
लहू देकर हिफाज़त की हमारे देश की जिसने।
वो आजादी के हर दीवानों का सम्मान करते हैं।।

सभी मिल आज फहराते ध्वजा आजाद भारत में।
चलो खुद को ही खोजे स्वयं खोकर राष्ट्र सेवा में।।
समस्या हो न कोई तो ये निश्चित जान लेना तुम।
नहीं आजाद भारत में जुनूँ बाकी दीवानों में।।

बहुत बलिदान वीरों ने किया तन-मन समर्पण से।
न जाने क्यों हुए हम हैं जुदा अपनों ही अपनों से।।
कहीं कोई गैर हमको जब हमीं से तोड़ना चाहे।
वहीं मिलकर निपटना हमको फिर इन जालसाजों से।।

हमें है देश प्यारा और है प्यारी अपनी आजादी।
जिसे कल तक सँवारा अब न होने देगें बर्बादी।।
हम अपने सब शहीदों की कसम खाते हैं प्राणों से।
सुरक्षित राष्ट्र रखेंगे समर्पण बलिदानों से।।

चलो आज़ादी की तस्वीर फिर से याद करते हैं।
शहीदों के दिलों में थी जो ज्वाला याद करते हैं।।

गुरु वंदन

शुभ दिन गुरु वंदन का बन्दे, नमन करो गुरु चरनन में।
ज्ञानपुंज गुरुवर जी होते, अग्रणी असुर निकंदन में।।
बाधाएँ सब टल जाती हैं, जब गुरु जी दर्शन देते।
ज्ञान ज्योति मुखरित हो उठती, वरद् हस्त जब रख देते।।

जीवन ये अनमोल सभी का, व्यर्थ न इसे गँवाना है।
भूले - भटके हर राही को, गुरु चरणों में जाना है।।
अपने अनुभव को बतलाकर, रिक्त मनस् बोधित करते।
न्याय सत्य के पथ पर चलना, गुरुवर सबसे हैं कहते।।

जनहित जीवन लक्ष्य जहाँ हो, कोटि नमन हम सब करते।
सदाशयी गुरु सत्यभाव से, शिष्यों में सद्गुण भरते।।
जब-जब दृष्टि पड़े गुरुवर की, जन्म मनुज सार्थक होता।
जड़ आकृति सब खिल है जाते, चेतन मुखरित भी होता।।

विविध ज्ञान से नित तराश कर, अंधकार गुरु सब हरते।
नियमित अनुशासित रहने को, गुरुवर सबसे हैं कहते।।
पंच वेद का पाठ पढ़ाते, तन - मन शोधित हो जाता।
चारित्रिक निर्माण शिष्य का, गुरु सानिध्य करा जाता।।

तिरंगा

अपनी भारत भूमि की, यही तिरंगा शान।
तीन रंग में है छिपा, हम सब का अभिमान।।1।।

लहर तिरंगा व्योम में, देता यह संदेश।
अमर शहादत को कभी, देना तनिक न क्लेश।।2।।

देख तिरंगा गौर से, करिए सब आभार।
वतन बाँकुरे हो गए, हँसते हुए निसार।।3।।

कफन तिरंगा ही मिले, रणवीरों की आस।
मान शहीदों को मिले, जिनसे मिला उजास।।4।।

कहीं तिरंगा जब दिखे, करिए उसे सलाम।
गर्व यही माँ भारती, रक्षा हो निष्काम।।5।।

अमर बलिदानी सुखदेव

आर्य भूमि को क्रान्तिकारियों ने, आभूषित सदा किया।
मंगल, भगत, गुरु, सुखदेव, सबने शहादत मोल लिया।।
आर्यावर्त के वीर पुत्र, सुखदेव जी जन्में लायलपुर।
हर्षित परिजन देख-देख कर, अपने कुल का दीपांकुर।।

आर्यसमाजी माता रल्ली, वीर कहानी कहती थीं।
क्रान्तिकारी सुखदेव की गतिविधि, हर्षित सबको करती थीं।।
बारह वर्ष की आयु में , सुखदेव समझने बहुत ल गे।
क्रान्तिकारी ताऊ अचिन्त्य को, देख के उनमें जोश जगे।।

ब्रिटिश हुकुम आया अंग्रेजी, झण्डे को सब नमन करो।
भारत माँ के रक्षक कहते, तनिक न ब्रिटिश को अमल करो।।
असहयोग आन्दोलन का भी, शुभारंभ यही घटना थी।
राष्ट्र की सेवा का संकल्प, लिए सुखदेव की सब धुन थी।।

क्रान्तिकारी ये लहू विरासत, में पाया सुखदेव ने।
आर्यावर्त के वीर पुत्र को, गोद लिया वसुधैव ने।।
अमर क्रान्तिकारी सुखदेव जी,आजादी दीवाने थे।
भगत सिंह आजाद साथ मिल, क्रान्ति की दृढ़ता ठाने थे।।

उत्तर -भारत ,पंजाब प्रमुख, सुखदेव संगठनकर्ता थे।
क्रान्तिकारी योजना के निर्णायक, विघ्नों के हर्ता थे।।
नौजवान भारतीय सभा का, गठन किया सुखदेव ने।
बौद्धिक चर्चाओं में युवाओं, को जोड़ा सुखदेव ने।।

कहते थे सुखदेव क्रान्तिपथ, प्रेम ही बाधा बनती है।
लेकिन भगत ने समझाया, भावना,,एँ संबल देती हैं।।
युवा साथ मिलकर अंग्रेजों , का विरोध भी खूब किया।
भागे सारे क्रान्तिकारी, यातना ब्रिटिश ने इन्हें दिया।।

यातना सहे पर झुके नहीं, साथियों का पता भी दिया नहीं।
बोस्टल जेल में बन्द रहें, हड़ताल भूख का किया यहीं।।
षड्यंत्र रचा लाहौर में, लाला जी के हत्यारे खातिर।
ब्रिटिश पुलिस अधिकारी को, मारा जो बनता था शातिर।।

क्रान्तिकारी इस मिशन के दो, स्तम्भ भगत सुखदेव रहें।
एक संगठन के वक्ता , सुखदेव रीढ़ - सी डटे रहें।।
सुखदेव योद्धामात्र नहीं, रणनीतिकार पारंगत थें।
गुप्त योजनाओं को अमलीजामा, नित पहनाते थें।।

सेंट्रल एसेम्बली बम के कांड, और सान्डर्स हत्याकांड में।
गिरफ्तार सुखदेव हुए, लेकिन थे अपने आन में।।
भगत विचार को अपनाकर, सुखदेव दिनोंदिन गहराए।
सान्डर्स हत्या सजा भी सुनकर, तनिक नहीं भी घबराए।।

हँसते-हँसते भगत ,गुरु संग , फाँसी फंदा चूम लिया।
वैचारिकी एकता से बलिदान, वतन हित निज का किया।।
क्रान्तिकारी सुखदेव अमर, बलिदानी को है कोटि नमन।
वन्दे मातरम्,,,,,आजादी के सभी शहीदों का वंदन।।

भारत माता अभिनंदन

इस दुनिया में सबसे सुन्दर अपनी भारत माता हैं।
माँ का अभिनंदन करना और रक्षा हमको भाता है।।

जन्म लिया भारत में जिसने नहीं अनर्थ वह सह पाता।
प्राणों की बलिदान भी दे वह दुश्मन से है लड़ जाता।।
भारत माँ के ऐसे वीरों पर नित गर्व जो करता है।
सावरकर,आजाद,भगतसिंह के कदमों पर चलता है।।

भारत माता की ये धरती समता का संवाद लिए।
सबकी है कल्याणमयी माँ शिवमय सदा प्रसाद लिए।।
नानक राम रहीम व ईसा सबका है सम्मान यहाँ।
धर्म-जाति व भेद-भाव का नहीं कोई स्थान यहाँ।।

सदा विविध में ऐक्य को साधे देती परिचय भारत माँ।
हिमगिरि से कन्याकुमारी तक देती आँचल छाँव है माँ।।
सकल विश्व का तीर्थ है भारत पावनता स्वीकार करो।
दुश्मन को भी मित्र बनाए इसका नित गुणगान करो।।

वसुधा सकल कुटुम्ब हमारा ये आदर्श जो स्वीकारे।
ऐसी भारत माता की रक्षा से कभी न हम हारे।।
सारे सुख-दुख बाँट जो आपस में व्यवहार निभाता है।
कोटि - कोटि कंठों से मिल वो भारत गौरव गाता है।।

सावन की हरियाली

सावन हरियाली लिए, देता ये संदेश।
झूला कजरी साथ में, पूजो सब नागेश।।

प्रमुदित वसुधा हो गई, हरियाली को देख।
सावन ने भी लिख दिया, हृदय प्रेम का लेख।।

सावन बदरा देख कर, चातक करता शोर।
हरियाली से मुग्ध हो, नाचे मन का मोर।।

सावन में नद-नाल सब, हुए लबालब आज।
हरियाली के साथ ही, दिखता उपवन साज।।

सावन रिमझिम में हुआ, मौसम भी अभिराम।
हरियाली को देखकर, जाते सब शिव धाम।।

सावन

(1)

दिवस सुहाने लग रहे, आया शिव का मास।
आनंदित शिवभक्त हैं, भरा हृदय उल्लास।।
हृदय भरा उल्लास, महीना सावन पावन।
काँवड़ियों की भीड़, लगे है बड़ा सुहावन।।
भगवामय परिधान, धारते हैं दीवाने।
हर-हर बम-बम बोल, लगे है बहुत सुहाने।।

(2)

सावन शिव का मास है, धरा करे श्रृंगार।
हरियाली चहुँ ओर है, हर्षित हैं नर-नार।।
हर्षित हैं नर-नार, करें शिव का जयकारा।
भक्ति-भाव के संग, लगे बम-बम का नारा।।
कहे 'शशी' दरबार, शंभु का है अति पावन।
करते धरा निवास, मास भर भोले सावन।।

(3)

सावन रिमझिम देख कर, शिव मुख पर मुस्कान।
भोले को भी भा गया, झूला कजरी गान।।
झूला कजरी गान, सुनाने हम सब आए।
सावन की सुर तान, सभी के मन को भाए।।
कहती 'शशि' साहित्य, हमारा है मनभावन।
सखियाँ झूमें आज, देख लो आया सावन।।

मानव बोलो कब चेतोगे

कलियुग में शोषण है जारी, नारी पर है विपदा भारी।
क्या यूँ ही लुटते देखोगे, मानव बोलो कब चेतोगे।।1।।

हैवानियत दरिंदें करते, फाँसी देने में हम डरते।
क्या ये सब चुपचाप सहोगे, मानव बोलो कब चेतोगे।।2।।

जिस बेटी पर जुल्म हुआ हो, चीख सुना तो दर्द उठा हो।
कालसर्प को कब कुचलोगे, मानव बोलो कब चेतोगे।।3।।

पीड़ित को दोषी ठहराना, अपना धर्म भूल सब जाना।
क्या तुम निज पथ से भटकोगे, मानव बोलो कब चेतोगे।।4।।

धर्म और कानून जहाँ हो, नारी अबला सदा वहाँ हो।
तथ्य कभी स्वीकार करोगे, मानव बोलो कब चेतोगे।।5।।

जय जय जय गुरुदेव

तीन लोक के देव गुरु, सुधिजन ये लो जान।
जिसे शरण गुरु का मिले, समझो वह धनवान।।

गुरु बिन ज्ञान नहीं मिले, मत रहिए अंजान।
जिसको जब भी गुरु मिले, मिटता है अज्ञान।।

माँ सबकी है प्रथम गुरु, सिखलाती पहचान।
पिता चरन में कर नमन, इनसे ही सम्मान।।

वन्दन सब गुरु को करूँ, जिनसे पाया ज्ञान।
संरक्षक हैं ये सदा, कर्म करो रख ध्यान।।

गुरु महिमा को जान कर, नित लो तुम आशीष।
देव दनुज ऋषिगण सभी, पाते कृपा शिरीष।।

गुरु सम कोई भी बड़ा, नहीं मिला संसार।
सुनना सबको ध्यान से, करना गुरु अनुसार।।

प्रकृति सभी की गुरु सदा , देती है यह सीख।
कर्म सभी जो आज का, बदलो मत तारीख।।

हरते पीड़ा शिष्य की, रख वाणी अनमोल।
पहचानो गुरु शब्द को, जय जय जय गुरु बोल।।

गुरु चरणों में कर नमन, धन्य हुई 'शशि' आज।
नित्य कृपा गुरु की मिले, पूरे हों सब काज।।

मित्र की मित्रता

कृष्ण-सुदामा जैसी यारी परिभाषित - सा चित्र है।
विपदा को बिन कहे समझ ले ऐसा सुन्दर चित्र है।।
जग जाहिर न करे कमी को अवगुण दूर भगाए जो।
प्रेम पुष्प को हृदय बसा कर दुख सारे सह जाए जो।।

मुस्काकर खिलखिला कभी गम सारे दूर भगा देता।
जीवन के सुख-दुख में मिलकर हरदम गले लगा लेता।।

लेता है पहचान त्वरित वह हँसी के पीछे छिपे दर्द को।
गिरने से पहले आगे बढ़ थाम है लेता मित्र को।।

कठिन राह पर बने प्रदर्शक तन्हा कभी न जो छोड़े।
तम में भी उजियारा बनकर पथ दिखला खुद को जोड़े।।

पाकर जिसका साथ गमों को भूल सकें वह मित्र है।
परछाईं बन साथ चले नाराज़ न हो जो मित्र है।।

गिले-शिकवे सब भूल जहाँ खुद को सुकून में पाते हैं।
सब रिश्ते जब सो जाते तब मित्र याद ही आतें हैं।।

अनुपम-सा यह एक खजाना प्रतिपल बढ़ता जाता है।
जितना खर्चो इसे रात-दिन दुगुना होता जाता है।।

कविता

अट्ठारह सौ अस्सी का दिन, शनिवार इकतीस जुलाई।
लमही नामक गाँव बनारस, खुशियाँ जहाँ थी लहराई।।
माता आनंदी की गोद ने, हिन्दी का नवरत्न जना।

❖ कवितायें

डॉ०(कु०)शशि जायसवाल
कवयित्री

पिता अजायब के आँगन में, धनपत जन्म का जश्न मना।।

मकतब में अध्ययन कर धनपत, अध्यापन का कार्य किए।
आह्वान गाँधी ने किया जब, त्याग नौकरी को भी दिए।।
मर्यादा, माधुरी, जागरण, 'हंस' का संपादन भी किया।
लेखन की शुरुआत उर्दू में, शीघ्र हिन्दी को धार लिया।।

लेखन से साहित्य जगत में, प्रेमचन्द्र विख्यात हुए।
दीन-दुखी की पीड़ा को निज, लेखनी में ही उतार दिए।।
कृषको की हर व्यथा को वर्णित, किया कृति गोदान में।
नारी की पीड़ा है निर्मला , गबन बनी पहचान में।।

रंगभूमि, गोदान , गबन , प्रेमाश्रम , ख्यात हैं उपन्यास।
ईदगाह, बड़े भाई साहब, पूस की रात, कफ़न है स्वाँस।।
प्रगतिशील लेखक के रूप में, प्रेमचन्द्र अग्रणी रहें।
रोग जलोदर ग्रस्त छोड़ तन, कृतियों में नित अमर रहें।।

शिक्षक मार्गप्रदर्शक होते

कतरा-कतरा शून्य जहाँ पर, ज्ञान से अन्तस् भर देते।
भूले भटके राही को भी, शरण में अपने ले लेते।।
जीवन ये अनमोल कभी भी, व्यर्थ नहीं उसका होता।
ज्ञानगुरु से वंचित होकर, जो अपना जीवन खोता।।

अपने अनुभव को बतलाकर, रिक्त मनस् बोधित करते।
सत्य और न्याय के पथ पर, चलने को शिक्षक कहते।।
संघर्षों से लड़कर जीना, शिक्षक ही सिखलाते हैं।
विह्वल होते शिष्य जहाँ, संबल उनका बन जाते है।।

सदाशयी और सत्यभाव से, शिष्यों में सद्गुण भरते।
देश के हित दायित्व निभा, गुरु कुम्भकार सम हैं गढ़ते।।
जड़-आकृति में जब रंग भरते, चेतन तत्व निखर आता।
पग-पग परछाईं बनते जब, शिष्य प्रखर-सा हो जाता।।

जब-जब दृष्टि पड़े जिसपर, गुरु जन्म सार्थक कर देते।
पाठ धैर्य का हमें बताकर, संकट सिर अपने लेते।।
शिक्षक भी जीवन भर पढ़कर, अध्ययनकर्ता ही रहते।
जनहित जीवन जीते शिक्षक, राष्ट्र प्रथम सबसे कहते।।

बड़े अनमोल हैं सपने

बचाने आज हमको हैं, हमारे टूटते सपने,
बनाया जो घरौंदा कल, नहीं क्यों हो सके अपने।
कहीं कुछ तो कमी संवाद में, जिससे बनी गाँठें,
ये गाँठें खुल सके हमसे, कभी बैठे यही गुनने ।।

अहं को मत जगह दीजे, यही अनबन कराता है,
जहाँ भी दूर ये रहता, वहीं मन मुस्कुराता है।
जरा समझो तो इसका मर्म, सपने सार जीवन के,
सभी मिल प्रेम से सींचों, यही दिल रँगराता है।।

बड़े अनमोल सपने है, बचाना मिल हमें इसको,
कोई काँटा भी चुभ जाए, निकालो प्रेम से उसको।
जहाँ मजबूत हो सम्बन्ध, राहें सब सरल होती,
मधुर सी याद सपनों की, हँसाती है सदा हमको।।

कभी एक टूटकर सपना भी, चकनाचूर हो जाता,
वहीं पर दूसरे सपने से, मन ये हौसला पाता।
इसी को जिन्दगी कहते हैं, यारों मुस्कुराओ तुम,
सृजन की है कला जिसमें, उसे पथ रोज दिख जाता।।

स्वयं के रूह में आकाश को, जिसने समाया हो,
नए नित स्वप्न की तस्वीर, जिसके खुद को भाया हो।
वो मुश्किल दौर में गुजरा, मगर टूटा न पलभर भी,
नई राहों पे चलकर दीप, लगता फिर जलाया हो।।

पृथ्वी कहती धैर्य न छोड़ो

पृथ्वी कहती धैर्य न छोड़ो,
ये जीवन अनमोल प्रिये।
कितना भी हो भार उठा लो,
मत अधीर होना सुप्रिये।।

पूछ रही है धरती हमसे,
माना तुम बेहाल हुए।
कोख हमारी इतनी सस्ती,
जो तुमने ये हाल किए।।

वृक्ष काटकर तूनू मुझको,
किया बहुत कंगाल यहाँ ।
माँ धरती मैं तेरी ही हूँ,
व्यथा सहूँ मैं जाऊँ कहाँ ।।

देख हरित मेरा प्रियतम है,
क्यों विधवा कर रहा मुझे।
बिन मेरे संसार न होगा,
तेरी चिन्ता मुझे प्रिये।।

मैंने हरदम दिया तुझे है,
मत सुहाग मेरा तू ले।
कितना दर्द मुझे अब देगा ,
मेरी पीर कभी सुन ले।।

तू भी एक पिता-माता है,
संकट से अनभिज्ञ नहीं।
बच्चों पर आफत न आए,
करता कुछ तो यत्न कहीं।।

एक बार मेरे करीब आ,
मेरी धड़कन जरा सुनो।
दिन-प्रतिदिन कम होती साँसे,
कुछ विचार तुम कभी गुनो।।

मत भूलो धरती खुश होती,
जब मुझपर पग रखते हो।
मातु गोद में नित तुम खेलो,
रक्षित हरित में दिखते हो।।

आने वाली हर पीढ़ी को,
बस संदेश यही मेरा।
हरित उगाओ मुझे बचाओ,
प्राणवायु सबका डेरा।।

इच्छाओं का सफर

सकारात्मक सोच जहाँ पर, मिटता वहाँ कहर।
कभी न कम होता जीवन में, इच्छाओं का सफर।।

हमें कर्म में रत रहना है, धूप हो चाहे शीत,
सुखी सदा रहना चाहो तो, करना सबसे प्रीत।
आपा - धापी की दुनिया में, जो जाता है ठहर,
उसे जकड़ लेता जीवन में, इच्छाओं का सफर।।

परम सत्य को जान के बन्धु, होना नहीं अधीर,
अडिग सदा रहना पथ पर तुम, जैसे रहते वीर।
लक्ष्य साथ हर कदम बढ़ाकर, पीना सभी जहर,
भटकाता मानव को हरदम, इच्छाओं का सफर।।

परहित जीवन से बढ़कर, नहीं मंजिल कोई श्रेष्ठ,
प्रेम और सम्मान है देना, अनुज हो चाहे ज्येष्ठ।
तेज है चलती हवा जहाँ पर, जाते पुष्प बिखर,
मन को करता चंचल हरदम, इच्छाओं का सफर।।

मुस्कान

मुस्कान ईश्वर का दिया वरदान है,
विषमता को मुस्कुराकर जीतिए।
सरल हो जाएगा जीवन आपका,
बात दिल की मानकर तो देखिए।।

शक्तिशाली अभिकरण ये मनुज की,
हर परिस्थिति में सहज मन राखिए।
भाषा व संस्कृति से परे ये है सदा,
स्नेह का एहसास करके देखिए।।

है यही मुस्कान जादू को लिए,
शत्रुओं के दिल को भी ये जीतता।
छिपी सुन्दरता को जो पहचान ले,
वो कठिनता में भी हरदम रीझता।।

जिन्दगी परिपूर्ण कब होता कभी,
अपनी दृष्टि को बदल कर देखिए।
हर चुनौती बीच इस मुस्कान को,
रख समस्या के भी हल को खोजिए।।

जिन्दगी की ये आपकी अनमोल है,
मुस्कुरा इसको सजाते नित रहें।
हर सुबह और शाम सुन्दर - सा लगे,
दुख गमों को अलविदा सब ही कहें।।

आँसुओं में भी छिपी होती खुशी,
मुस्कुराकर के उजागर कीजिये।
दोस्त बन जाएगा ये मुस्कान भी,
बात दिल की मानकर तो देखिए।।

जैसा कर्म करेगा कोई, वैसा ही फल पाएगा

जीवन का हर मर्म समझ ले, वर्ना तू पछताएगा।
जैसा कर्म करेगा कोई, वैसा ही फल पाएगा।।

मुँह में राम बगल में छूरी, बहुत सख़्त अपराध है,
निर्मल मन की गहराई में, पावन भाव अगाध है।
उहापोह की हर स्थिति, बेकल करती है मानस को,
भौतिकता का संचय मत कर, छूट यहीं सब जाएगा।।
जैसा कर्म करेगा कोई, वैसा ही फल पाएगा,,,,,,

मात-पिता की सेवा कर ले, सभी धाम इन चरणों में,
राग-द्वेष को छोड़ दे मानव, बँटा आज क्यो वर्णों में।
सुख-दुख को सम मान सदा, तुम प्रेम राग को ही गाना,
जाति भेद का रोग हमें , इस जग में बस उलझाएगा।।
जैसा कर्म करेगा कोई, वैसा ही फल पाएगा,,,,,

मेरा-तेरा भाव छली मन, रटता नित दिन -रात है,
स्वार्थ साधना में लिपटी , होती उसकी सब बात है।
इन सब से जो दूर लक्ष्य, पा लेता श्रम की धार में,
अर्पण भाव सजा ले मन में, धरा स्वर्ग बन जाएगा।।
जैसा कर्म करेगा कोई, वैसा ही फल पाएगा,,,,,

हवा का रुख बदल जाए

हवा का रुख बदल जाए,इरादा गर बना लो तो।।
हमें न आज़माना तुम, अगर हम ज़िद में आएँ तो।
हवा का रुख बदल जाए, इरादा गर बना लो तो।।

ये मौसम का ठिकाना भी कहाँ, करवट कहाँ बदले,
कभी तपती धरा की इक व्यथा, हम ध्यान से सुन ले।
जहाँ पुरवाइयाँ चलती मगन, पछुआ भी पीछे हो,
बहकती-सी हवा मन लुभा जाए, दिल लगाओ तो।।
हवा का रुख बदल जाए, इरादा गर बना लो तो,,,,

नदी तट झूमती डाली , ये कलरव कर रहें पंछी,
सरोवर में कलश भरती, हुलस गोरी नयन तिरछी।
जवां दिल आह भरते देख, नटखट सी अदाओं को,
कभी दरिया किनारे बैठ, चितवन को निहारो तो।।
हवा का रुख बदल जाए, इरादा गर बना लो तो,,,,

कहीं पर्वत के उन्नत श्रृंग, मन को मोह लेते है,
कभी कल-कल से झरने, जिन्दगी को मोड़ देते हैं।
घने मेघों की टकराहट को सुन, बेचैन मन होता,
हमारी चेतना कहती, प्रकृति के पास आओ तो।।
हवा का रुख बदल जाए, इरादा गर बना लो तो,,,,

गिरे रिमझिम-सी बूँदें जिस जगह, तन सिहर है उठता,
चले आओ प्रिये कुछ पल , उठा तूफाँ कब रुकता।
ये मौसम की तपन जो बढ़ चली, अकुला रही धरती,
है माटी प्रेम उर झलके, दो पेड़ो को लगाओ तो।।
हवा का रुख बदल जाए, इरादा गर बना लो तो,,,,

रामभक्ति

जिनके मन में राम विराजे,
जन्म सफल उस मानव का।
जपे राम का नाम सदा ही,
सुमिरन कर मन राघव का।।

भक्तिभाव का पर्व हमें,
सत्कर्म मार्ग दिखलाता है।
राम का ही आदर्श सभी,
मुश्किलों में धीर सिखाता है।।

राम के पदचिन्हों पर चल,
मर्यादा जीवन में सीखें।
रिश्तों की अहमियत समझकर,
वाणी छोड़े सब तीखें।।

मानव को कर्त्तव्यनिष्ठ बन,
जीवन पथ पर चलना है।
साहस और निर्भय बनकर,
सब कुरीतियों से लड़ना है।।

त्याग वीरता जन मानस में,
प्रभु राम की कृपा रही।
बलिदान, तप और साधना,
जागृत मन को लगन रही।।

भक्तिभाव का रस जन-मन में,
सकारात्मकता लाए।

शहर समता - ब्यूरो प्रमुख

देहरादून ब्यूरो - निशा अतुल्य, -91 98378 94997
जबलपुर ब्यूरो -अनीता दुबे -91 78696 43222
जौनपुर ब्यूरो - डॉ मधु पाठक,-91 94151 69522
हैदराबाद ब्यूरो -रीना प्रदीप कुमार,-91 70935 29183
भिलाई ब्यूरो - संध्या चंदेल,-91 99934 42579
गोरखपुर ब्यूरो - सरिता सिंह - 96282 04228
दिल्ली ब्यूरो - अफरोज़ अजीज, -91 96439 68797
तिनसुकिया गोलाघाट ब्यूरो - रंजना बिनानी, - 91 94355 15469
प्रयागराज ब्यूरो - गीता सिंह 94152 13851
चंडीगढ़ सिटी - प्रभजोत कौर -91 76969 19159
इंदौर ब्यूरो - आशा जाकड़,-91 97549 69496
शिलांग ब्यूरो - नीता शर्मा -91 98630 29640
बिलासपुर ब्यूरो -संगीता बनाफर-91 70003 39148
रायपुर ब्यूरो - सीमा निगम,-91 78694 58122
कानपुर ब्यूरो - श्रद्धा श्रीवास्तव ,73765 45711
भोपाल ब्यूरो - साधना शुक्ला -91 94256 52547
जगदलपुर इकाई - स्मृति मिश्रा 'रीति'-91 93004 31143
बनारस ब्यूरो - सुनीता जौहरी, -91 6386 869 055
विश्वनाथ इकाई - सैयदा आनोवारा खातुन- 91 96787 72219
बिजनौर ब्यूरो - त्र-तुबाला रस्तोगी,-91 98971 11416
धमतरी ब्यूरो - श्रद्धा कश्यप -91 6265 018 551
बैंगलुरु ब्यूरो - अंजू भारती -91 84709 77659
गोडा ब्यूरो - सरिता कपूर -91 73768 96768
सुल्तानपुर ब्यूरो - माधवी शुचि -91 83170 45106
नोएडा ब्यूरो - प्रवीणा त्रिवेदी -91 85060 60468
पटना ब्यूरो - आ. मीना परिहार -91 70708 00416
लखनऊ ब्यूरो - अपर्णा गुप्ता --91 97933 18465
मंडला ब्यूरो - डॉ अर्चना जैन -91 93007 55500
भीलवाड़ा इकाई - डॉ राजमति पोखराना 81046 39622

संस्थापक
स्व0 कन्हैया लाल, स्व0 साधना श्रीवास्तव

सम्पादक
उमेश चन्द्र श्रीवास्तव
आरएनआई नं0 UPHIN/2001/3996

उप संपादक
डा0 अरूण कुमार मिश्रा
संजय सक्सेना
रचना सक्सेना

Mo. 9005239332
Email-shaharsamta@gmail.com

स्वत्वाधिकारी/मुद्रक/प्रकाशक/सम्पादक उमेश चन्द्र श्रीवास्तव द्वारा इण्डियन प्रेस (पलि.) प्रा0लि0, 36 पन्ना लाल रोड, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर 289/238ए, (अनन्त भवन) कर्नलगंज, इलाहाबाद से प्रकाशित।

इस अंक के प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा समस्त विवादों का निपटारा इलाहाबाद न्यायालय में ही होगा।

❖ कवितायें

डॉ०(कु०)शशि जायसवाल

कवयित्री

मनुज निरोगी काया से रह,
रामभक्ति को पा जाए।।

आओ जीवन धन्य करें

योगेश्वर भगवान कृष्ण की, भक्ति मन चैतन्य करें।
योग ध्यान को अपनाकर के, आओ जीवन धन्य करें।।

वसुधा सकल कुटुम्ब हमारा, इसका ध्यान रहें हमको,
ज्ञान साधना कर्म हमारा, मिटा दे मानस के दंभ को।
विश्व शान्ति के लिए प्रेम का, प्रतिपल हम संचार करें,
मिलकर युद्ध विराम साथ सब, आओ जीवन धन्य करें।।

मानव जन्म मिले मुश्किल से, व्यर्थ न होने देना है,
परहित गरल भी पीना हो तो, हँसकर हमको पीना है।
कभी किसी की कमी न देखे, सद्गुण विकसित सदा करें।
प्राणीमात्र को सुखी बनाकर, आओ जीवन धन्य करें।।

इस भीषण गर्मी में चाहें, जीव जंतु सब छाया

प्रकृति का शोषण करने में, तनिक न मन सकुचाया।
इस भीषण गर्मी में चाहें, जीव - जन्तु सब छाया।।

कल तक हरियाली थी जग में, घने-घने जंगल थे।
सब मिलजुल कर साथ बैठते, सारे घर मंगल थे।।
स्वार्थ लोभ लोलुपता से जब, ये मानव भरमाया।
इस भीषण गर्मी में चाहें, जीव जंतु सब छाया।।

रोता पथिक राह में अब है, कहीं न शीतलता है।
कुएँ बावड़ी सूख रहें सब, दिखे न मानवता है।।
तप्त सूर्य से झुलस रहा जग, कैसा जाल बिछाया।
इस भीषण गर्मी में चाहें, जीव जंतु सब छाया।।

नहीं चाहिए बड़ी हवेली , जीवन प्रथम जरूरी।
तनिक रोक लो अपनी इच्छा, इसमें क्या मजबूरी।।
कल जिन्दा इन्सान न होगा, सोच- सोच घबराया।
इस भीषण गर्मी में चाहें, जीव जंतु सब छाया।।

संविधान हूँ बोल रहा हूँ

संविधान हूँ बोल रहा हूँ, अन्तर्मन की खोल रहा हूँ।
अस्सी बरस की आजादी में, सच में अब आबाद हुआ हूँ।।

अमर शहीदों की गाथा हूँ, मन ही मन मैं हर्षाता हूँ।
बाबा भीमराव स्याही से , निकला मैं एक विख्याता हूँ।।

लोकतंत्र का न्यायी हूँ मैं, अधिकारों की स्याही हूँ मैं।
मुझको अनदेखा मत करना,कर्त्तव्यों का ध्यायी हूँ मैं।।

मेरे सब नियमों को अपने, आचरणों में संग संग रखना।
दीन-दुखी जनता के मन को, अनदेखी भी कभी न करना।।

कोई भूखा यहाँ न सोए, बिन लिबास तन कोई न होए।
सबके सिर पर छत है रखना, मालिक चाहे कोई खोए।।

जब कोई भूखा मरता है, मन मेरा क्रन्दन करता है।
अकुलाकर स्याही तब रोती, दुर्योधन जब हठ करता है।।

शान्ति आज क्यों हास्य हो गई, विस्फोटों की भाष्य हो गई।
न्याय-व्यवस्था भी रोती है, आसमान कुछ स्याह हो गई।।

कुछ परिवर्तन माँग रहा हूँ, दुखद बोझ से भरा पड़ा हूँ।
अपनी नब्ज़ टटोल के कहता, चूक हुई लाचार पड़ा हूँ।।

बहुत दिवस की पीड़ा मेरी, अनदेखा कर अब मत टारो।
बहुत समय यूँ बीत चुका है, संशोधन कर मुझे उबारो।।

रूढ़िवाद को जो न त्यागे

समय काल के साथ चले जो, जीवन सफल वो कर जाए।
रूढ़िवाद को जो न त्यागे , मंजिल कभी नहीं पाए।।

रूढ़िवाद वो दलदल है, जिसमें सर्वस्व है खो जाता,
शून्य से शुरु हुआ जो सफर, वह खत्म शून्य पर हो जाता।
कौन है अपना कौन पराया, कभी ये चक्र ना अपनाए,
रूढ़िवाद को जो न त्यागे , मंजिल कभी नहीं पाए।।

थोड़ा बुरा समय जब आए, कुछ पल ठहर वहीं जाना,
कभी मुसीबत कदम बढ़ाए, तनिक नहीं तुम घबराना।
वक्त बताएगा क्या करना , किसे छोड़ हम बढ़ जाए,
रूढ़िवाद को जो न त्यागे, मंजिल कभी नहीं पाए।।

रिश्ते जहाँ जबरदस्ती के, मिलता वहाँ सुकून कहाँ,
घुटन जहाँ महसूस हो तुमको, टिकना क्षणभर नहीं वहाँ।
कठिन बहुत पाने से ज्यादा , उसे सँभाल लिया जाए,
रूढ़िवाद को जो न त्यागे , मंजिल कभी नहीं पाए।।

मुझमें लाख बुराई भी है, लेकिन खूबी साथ रही,
मतलब खातिर कभी न रिश्ता, रखना गलत हो या हो सही।
कसक उठे बेताब तमन्ना, मगर हौंसला ना जाए,
रूढ़िवाद को जो न त्यागे , मंजिल कभी नहीं पाए।।

जब मौसम ले अँगड़ाई

मौसम का गीत बुनूँ जब, मन में उठती तरुणाई।
बेगाना सा लगता है, मौसम जब ले अँगड़ाई।।

कभी गर्मी ठंडक देती, दुश्वार कभी है जीना,
जब ठिठुरन याद करुँ तो, श्रृंगार का लगे महीना।
रिमझिम बारिश की बूँदे, सिहरन से तनिक लजाई,
बेगाना - सा लगता है, जब मौसम ले अँगड़ाई।।

मौसम का जादू ऐसा, जो मन में प्यार जगा दे,
रंग बदले है ये पल-पल, न मालूम कहाँ दगा दे।
आई मतवाली पुरवा, संग आँधी तूफाँ लाई।
बेगाना - सा लगता है, जब मौसम ले अँगड़ाई।।

ये कहाँ - कहाँ से होकर, लाती मंजिल अनजानी,
मुझको बरसात बना लो, मैं रिमझिम की दीवानी।
करें तेरी सभी प्र तीक्षा, तुझसे गरमी नरमाई,
बेगाना - सा लगता है, जब मौसम ले अँगड़ाई।।

कागज के फूल

सिमट-सिमट जब जाते हैं, ये कुछ कागज के फूल,
झड़ कर गिरते कभी नहीं, पड़ जाते इस पर धूल।
जितने दिन ये हरे - हरे , बस खुशनसीब होते हैं,
ध्यान रहें रंग कभी न बदले, न होते प्रतिकूल।।

जीवित पुष्प तो झड़ जाते, बचते कागज के फूल,
मानव वो जीवन जी लेते, जो रहते अनुकूल।
जीवन की नश्वरता का और, कला का यही प्रतीक,
प्रतिभा को मत खोने दो, बिन इसके सब निर्मूल।।

जीवन सरस बना न सकते, ये कागज के फूल,
मैं धरती तू अम्बर लेकिन, सूना आज समूल।
हर पल तकती हूँ क्यों लगता, खुशबू भी निस्तेज,
कैसे चंदन - सा जीवन हो, बोया जहाँ बबूल।।

❖ जीवन परिचय

डॉ०(कु०)शशि जायसवाल

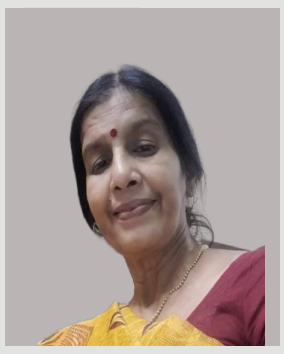

डॉ०(कु०)शशि जायसवाल

सेवामुक्त प्रवक्ता - समाजशास्त्र, राजर्षि टण्डन महिला महाविद्यालय, सम्बद्ध इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।

जन्म :- 08/09/1958
माता :- श्रीमती शान्ती देवी
पिता :- श्री महावीर प्रसाद जायसवाल
शिक्षाः- स्नातकोत्तर, डी फिल् संस्कृत (इलाहाबाद विश्वविद्यालय) एवं
समाजशास्त्र , पी एच डी(नेहरू ग्राम भारती विश्वविद्याल य) (अप्राप्य)
प्रभाकर एवं प्रवीण - शास्त्रीय संगीत(गायन)
डिप्लोमा - कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर एण्ड एप्लीकेशन
जन्म स्थान :- प्रयागराज (इलाहाबाद)
भाषा :- हिन्दी/ अंग्रेजी
लेखन विधा :- हिन्दी
कार्यक्षेत्र :- अध्ययन एवं अध्यापन कार्य, समाजशास्त्र (1989 - 2019)
सेवामुक्त प्रवक्ता - समाजशास्त्र, राजर्षि टण्डन महिला महाविद्यालय, सम्बद्ध इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।
सम्प्रति - स्वतंत्र साहित्यिक लेखन एवं समीक्षा कार्य के साथ-साथ सामाजिक एवं सांस्कृतिक संस्थाओं से सम्बद्ध कार्य।

पता - 5, शिव चरन लाल रोड, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश।
पिनकोड -211003
ई-मेल - shashijaiswal79219@gmail.com
सम्पर्क सूत्र - 8318922632

साहित्यिक उपलब्धियाँ :-

प्रकाशन -

- पुस्तक सामाजिक परिवर्तन - आधुनिकीकरण (अध्याय)1992
- मासिक पत्रिका - संकल्प में शिक्षा, पर्यावरण, समाज व संस्कृति से सम्बन्धित ल ख प्रति माह की मासिक पत्रिका में।
- एकल काव्य संग्रह - काव्य गगन (मन तू अधीर क्यों है)
-साझा काव्य संग्रह - काव्य वाटिका , काव्य क्षितिज , कलम बोलती है कनकप्रभा , सूर्य रश्मि भाग -2 , जगदीश साझा संकलन बरखा बहार , शक्ति आराधना , शारदीय नवरात्र - साझा संकलन , अटल बिहारी बाजपेई - साझा संकलन , महाकुंभ - साझा संकलन आदि अनेकानेक साझा संकलन में कार्यों का प्रकाशन।
गद्य साहित्य में प्रकाशन - शक्ति आराधना - अष्टपीठ माँ कल्याणी देवी साझा संकलन , हिन्दी साहित्य मंच - स्थापना दिवस त्रैमासिक पत्रिका2025 ,
संचार क्रान्ति का हिन्दी साहित्य पर प्रभाव 2024
सामाजिक परिवर्तन स्नातक पाठ्यक्रम पुस्तक में प्रकाशित अध्याय - आधुनिकीकरण

ई-पत्रिका कलम की ताकत साहित्यिक संस्थान भारत - जीवन का अन्तिम लक्ष्य क्या है?
ई-पत्रिका हमारा प्यारा भारत साहित्यिक संस्था - शब्दों की फुलवारी

ई-पत्रिका शब्द सिदिक्षा त्रैमासिक ई-पत्रिका - राष्ट्रीय खेल दिवस , नारी सशक्तिकरण , वन्दे मातरम् , मनभावन सावन जलवायु परिवर्तन आदि रचनाएँ
आदि,,,,,,

अन्य प्रकाशन -

1- महाग्रन्थ ---

(अ) 'कृष्णायण महाग्रन्थ' में उद्धव-कृष्ण संवाद प्रसंग पर आधारित वृहत् रचना का प्रकाशन।

(ब) 'शिवायन महाग्रन्थ' में गणेश-कार्तिकेय विवाह प्रसंग पर आधारित वृहत् रचना का प्रकाशन।

(स) ' गीतायन महाग्रन्थ' हेतु कौरव- पाण्डव पर्व के अन्तर्गत महाभारत में कर्ण एवं एकलव्य की कहानी तथा कर्ण की धनुर्विद्या एवं एकलव्य का गुरु द्रोणाचार्य को अंगूठा दान प्रसंग पर लेखन कार्य गतिशील आदि,,,,,,

(अ) विभिन्न राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में पढे .गए 25 से अधिक शोध-पत्रों का प्रकाशन।

3.अमर उजाला, हिन्दुस्तान, आज, यूनाईटेड फ्रीडम , नवभारतटाइम्स आदि अनेक दैनिक-पत्रों में कविताओं एवं लेखों का बहुधा प्रकाशन ।

4. मतंग के राम, अयोध्या मंच पर भगवान श्रीराम जी को समर्पित रचना प्रस्तुति प्रमाण पत्र।

5. शहर समता विचार मंच, प्रयागराज में अनेकानेक काव्य प्रस्तुति एवं कलम बोलती है साझा संकलन में 5रचनाओं का प्रकाशन।
6. सोशल मीडिया के विभिन्न मंचों पर 100 से अधिक बार काव्य पाठ प्रस्तुति एवं सम्मान प्रमाण पत्र निर्गत।
7. संस्कार न्यूज दैनिक पत्र(डिजिटल) पर अनेकों बार रचनाओं का प्रकाशन।
8. रायबरेली पुस्तक लोकार्पण समारोह (आदरणीय शिव नाथ सिंह) में मंच पर पाँच 9 पुस्तकों का विमोचन करने का अवसर प्राप्त। काव्य प्रस्तुति एवं प्रमाण पत्र निर्गत।
9. अखण्ड काव्यार्चन, साहित्योदय के लंदन वर्ल्ड रिकॉर्ड में सहभागिता एवं प्रमाण -पत्र निर्गत।
10. बुलन्दी, सामाजिक एवं सांस्कृतिक संस्था द्वारा प्राप्त वर्ल्ड रिकॉर्ड प्रमाण पत्र।
11. विभिन्न मंचों पर मूख्य अतिथि एवं अध्यक्षता करने का अवसर प्राप्त।
12. स्वरांजलि में 4 बार नगमों की प्रस्तुति का अवसर एवं प्रमाण पत्र निर्गत।
13 दैनिक रूप में जगदीश साहित्य संस्थान सहित विभिन्न काव्य/साहित्य मंचों पर काव्यार्चन का अवसर प्राप्त एवं 150 से भी अधिक प्राप्त सम्मान प्रमाण पत्र निर्गत।
14 काव्य रसिक मंच राजस्थान इकाई द्वारा आयोजित मुक्तक रचना प्रतियोगिता-2024 में सर्वश्रेष्ठ रचनाकार में प्रथम स्थान

सम्मान :-

☐ सर्वश्रेष्ठ कार्यक्रम अधिकारी पुरस्कार (राष्ट्रीय सेवा योजना, इलाहाबाद विश्वविद्यालय)
☐ वालीबॉल टीम लीडर पुरस्कार (प्रथम)

☐बुद्ध अन्तरराष्ट्रीय साहित्य महोत्सव 2024 में - महात्मा बुद्ध सम्मान 2024
☐साहित्योदय अन्तरराष्ट्रीय साहित्यिक सांस्कृतिक मंच (पंजी0)द्वारा प्राप्त
' लंदन बुक ऑफ रिकॉर्ड' एवं ' वर्ल्ड ग्रेटेस्ट रिकॉर्ड' सम्मान 2025
☐साहित्योदय अन्तरराष्ट्रीय साहित्यिक सांस्कृतिक मंच (पंजी0)द्वारा प्राप्त यूएन वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्ड सम्मान 2026
☐ बुलंदी साहित्यिक सेवा समिति पंजीकृत(अन्तरराष्ट्रीय) देवनागरी सम्मान 2024
0 (15/06/2025)
☐परलकोट साहित्यिक मंच द्वारा कृष्णम् वन्दे जगद्गुरुम् सम्मान (20/08/2025)
- काव्य प्रतिभा सम्मान (23/06/2025)
☐मातृ भाषा काव्य मंच द्वारा प्राप्त - अखण्ड भारत काव्य रत्न सम्मान , काव्य कामना सम्मान (30/12/2025)- सिद्धिदात्री भक्त सम्मान (28/09/2025)- काव्य अमृत सम्मान (30/08/2025) मातृ भाषा शिरोमणि सम्मान (30/07/2025) , मातृ भाषा साहित्य तुलसी सम्मान जैसे लगभग 15 से अधिक सम्मान।